गम्भीरता से समझा, अपनी पैनी दृष्टि से देखा और अपनी तीखी शैली में कह दिया धर्मतन्त्र और अध्यात्म की स्थापना साधु-सन्तों की महिमा और शाश्वत सिद्धान्तों के जीवन मूल्यों की अवहेलना किये बिना असम्भव ही है। इस तथ्य को कबीर की नस-नस में बहता हुआ देखा जा सकता है। साधना, उपासना, चरित्र, सद्‌गुण, सत्य, न्याय, प्रेम, गुरु, शास्त्र, दर्शन आदि के प्रति अगाध श्रद्धा व्यक्त करने में, आवश्यकता प्रतिपादित करने में कबीर अपने समय के सभी विद्वानों से आगे निकल गये।

संत कबीर ने अपने समय में प्रचलित पाखण्ड और अन्ध-विश्वास का ही खण्डन नहीं किया वरन् उस समय की कई सामाजिक कुरीतियों और परम्पराओं को भी नहीं बख्शा। जाति-पाँति से लेकर मुसलमान तक और बाह्य चिह्न पूजा से लेकर पशुबलि के अन्धविश्वास तक कोई भी विकृति उनके आक्रमण से बच नहीं सकी। नि:सन्देह ऐसी प्रवृत्तियाँ सम्बन्धित नेतृत्व में निहित स्वार्थ की भावना पनपने के कारण आती हैं। इन परम्पराओं और मान्यताओं पर प्रहार होते देखकर स्वार्थी तत्त्वों का कुपित होना स्वाभाविक ही है और संत कबीर को ऐसों का कोपभाजन बनना ही पड़ा परन्तु उन्होंने अपना मार्ग नहीं छोड़ा।

तत्कालीन शासक सिकन्दर लोदी ने उन्हें तरह-तरह से उत्पीड़ित किया। शारीरिक यातनाओं से लेकर मरणान्तक कष्ट देने तक कोई उपाय नहीं छोड़ा। परन्तु अन्तर्निहित जाग्रत आत्मदेव की शक्ति क्षमता ने उनका सदैव बचाव किया। एक बार तो उन्हें गंगा तक में फेंक दिया गया, पर सिद्धान्तों और आस्था निष्ठाओं के धनी कबीर ने जीवन मूल्यों को ही अधिक महत्त्व दिया।

उनके व्यक्तिगत निजी जीवन की ओर दृष्टिपात करने पर तो सर्वाधिक विस्मित रह जाना पड़ता है। कुलहीन व्यक्ति ने और वह भी अनपढ़ जिसकी अँगुली ने कभी कागज और कलम को छुआ तक नहीं, कैसे इतना साहित्य सृजन किया, अपने व्यक्तित्व में कहाँ से इतनी प्रभावकारी क्षमता अर्जित की जिसने क्या मुगल साम्राज्य और क्या हिन्दू धर्म की पण्डा-पुरोहित नियन्त्रित व्यवस्था की जड़ें हिला दीं। कबीर के कई-कई दोहे ऐसे हैं जिनका अर्थ आज तक नहीं खोजा जा सका है। उनकी उलटवासियाँ तो शोध छात्रों का प्रिय विषय बनी हैं। उन पर शोध प्रबन्ध लिखकर ही वे अपनी योग्यता तथा विद्वत्ता को प्रमाणित करते हैं। कबीर के व्यक्तित्व की इस समृद्धि और सम्पन्नता की ओर देखने पर अध्यात्म तथा धर्म को, जीवन विद्या में निहित शक्ति जागरण की महानतम सम्भावनाओं को स्वीकार करना ही पड़ता है।

समाज में उनका प्रभाव और अनुयायियों की एक बड़ी संख्या होते हुये भी कबीर ने जुलाहों का-सा घर का पेशा अपनाया। वे एक साधारण गृहस्थ की तरह जिये। लोई जो उनकी धर्मपत्नी थीं ने दो बच्चों को भी जन्म दिया। पारिवारिक उत्तरदायित्वों के होने पर भी कबीर की मस्ती और सेवा साधना में कोई अन्तर नहीं आया। समाज में व्यापक परिवर्तन के सूत्रधार बनकर भी— अहर्निश इन प्रवृत्तियों और गतिविधियों में संलग्न रहकर भी कबीर ने अन्य साधु-संन्यासियों की तरह कभी भिक्षा या दान नहीं लिया। इस मार्ग के अन्य पथिकों को भी उन्होंने सदैव यही प्रेरणा दी—

**साधू संग्रह न करे, उदर समाता लेय।**
**आगे पीछे हरि खड़े, जो माँगो सो देय॥**

और—

**जो जल बाढ़ै नाव में, घर में बाढ़ै दाम।**
**दोनों हाथ उलीचिये, यही सज्जन को काम॥**

इस आदर्श को लेकर जीने वाले व्यक्ति ही अपने जीवन में समाज सेवा के लिए, नवनिर्माण के लिए कुछ कर पाने में समर्थ हो सकते हैं, अन्यथा जीवन स्त्री-बच्चों के लिए विलास सुविधायें जुटाने में ही बीत जाता है। १२० वर्ष की आयु में सन्त कबीर का देहान्त सन् १५८० ई० में हुआ। अपने अन्तिम समय में वे मगहर चले गए थे क्योंकि लोगों की मान्यता थी कि मगहर में मरने वाला व्यक्ति नर्क को जाता है। मरने के बाद भी अन्धविश्वास टूटे इसके लिए कबीर कितने यत्नशील थे।

## कबीर की सिखावन

एक बार एक गृहस्थ कबीरदास के पास सत्संग के लिये गया। वह व्यक्ति अपने दाम्पत्य जीवन से असंतुष्ट था। स्वागत शिष्टाचार के बाद गृहस्थ ने पूछा— भगवन्! सुखी दाम्पत्य जीवन का रहस्य क्या है?

कबीर उस व्यक्ति की निराश मुख-मुद्रा देख कर समझ गये कि उसकी धर्मपत्नी से पटती नहीं। कबीर यह कह कर कि— "अभी समझाता हूँ" घर के भीतर चले गये।

थोड़ी देर में घर से सूत लेकर लौटे और उस व्यक्ति के सामने बैठकर उसे सुलझाने लगे। दो मिनट बाद अपनी पत्नी को आवाज लगाकर कहा यहाँ बड़ा अँधेरा है सूत नहीं सुलझता, दीपक तो रख जाओ। उनकी पत्नी दीपक जलाकर लाई और चुपचाप रखकर चली गई।

उस व्यक्ति को आश्चर्य हुआ कि क्या कबीर जी अंधे हो गये हैं जो सूरज के प्रकाश में भी उन्हें अँधेरा लगता है। इनकी पत्नी भी कैसी है जो बिना प्रतिवाद किये दीपक जलाकर रख गई। इसी बीच उनकी स्त्री दो गिलासों में दूध लेकर आई, एक उस आदमी के सामने रख दिया दूसरा कबीर को दे दिया। दोनों दूध पीने लगे। थोड़ी देर में स्त्री फिर आई और कबीर से पूछने लगी दूध में मीठा तो कम नहीं है। कबीर बोले नहीं, बहुत मीठा है, इसके बाद वे उसी भाव से दूध पी गये। वह आदमी फिर हैरान हुआ कि उसमें मीठा तो था भी नहीं गलती से चीनी की जगह नमक डाल दिया गया था।

आदमी बहुत झल्लाया, बोला— महाराज मेरे प्रश्न का उत्तर न दे सकें तो चलूँ? कबीर बोले भाई समझा तो दिया और क्या सुनना चाहते हो? विस्तार से सुनना चाहते हो, तो? देखो परिवार के लिये आवश्यक है कि सदस्यों को अपने अनुकूल बनाओ और स्वयं भी

परिवार के अनुकूल बनो । पत्नी और संतति को सुशील और आज्ञाकारी बना सको और स्वयं भी जीवन में हर जगह स्नेह और क्षमता का दान दे सको, तभी गृहस्थ जीवन सफल हो सकता है । वह व्यक्ति सारी बात समझ गया और खुशी-खुशी घर लौट आया ।

## दृष्टिकोण की भिन्नता

कबीर सिद्ध पुरुष की तरह प्रख्यात हो गये । दूर-दूर से जिज्ञासु लोग आते । तब भी वे पहले की तरह ही कपड़ा बनाते रहते और साथ-साथ सत्संग चलाते ।

शिष्यों में से एक ने पूछा— ''आप जब साधारण थे तब कपड़ा बुनना ठीक था, पर अब जब कि सिद्ध पुरुष हो गये और निर्वाह में कमी नहीं रहती तो आप कपड़ा क्यों बुनते हैं ।''

कबीर ने सरल भाव से कहा— ''पहले मैं पेट पालने के लिए बुनता था । पर अब मैं जन-समाज में समाये हुए भगवान् का तन ढकने और अपना मनोयोग साधने के लिए बुनता हूँ ।''

कार्य वही रहने पर भी दृष्टिकोण की भिन्नता से उत्पन्न होने वाले अन्तर को समझने से शिष्य का समाधान हो गया ।

## विश्वास की प्रगाढ़ता—दाम्पत्य जीवन की आधारशिला

कबीर अपने दरवाजे पर बैठे ग्रामवासियों को उपदेश दे रहे थे । तभी एक युवक ने पूछा— महाराज ! यह तो बताइये कि विवाह करना ठीक होता है या नहीं ? कबीर एक क्षण चुप रहे फिर अपनी पत्नी को आवाज देकर बुलाया और कहा— देख ! यहाँ बड़ा अन्धकार फैला है दीपक तो जला कर ले आ । धर्म-पत्नी घर गई और दीपक जलाकर ले आई । युवक हँस कर बोला— महाराज ! आप तो विलक्षण हैं ही आपकी पत्नी भी खूब हैं । आप दिन को रात बताते हैं तो पत्नी ने दीपक लाकर आपकी बात का समर्थन भी कर दिया । क्या खूब नाटक रहा । कबीर हँसकर बोले— नाटक नहीं, तुम्हारे प्रश्न का उत्तर । यदि युवक-युवती एक-दूसरे पर इतना प्रगाढ़ विश्वास रख सकें तो ही उन्हें विवाह करना चाहिए ।

## संन्यासी बनूँ या गृहस्थ

एक जिज्ञासु कबीर के पास पहुँचा, बोला— 'दो बातें सामने हैं— संन्यासी बनूँ या गृहस्थ ।'

कबीर ने कहा— 'जो भी बनो आदर्श बनो ।'

उदाहरण समझाने के लिए उन्होंने दो घटनाएँ प्रस्तुत कीं ।

अपनी पत्नी को बुलाया । दोपहर का प्रकाश तो था, पर उन्होंने दीपक जला लाने के लिए कहा ताकि वे कपड़ा अच्छी तरह बुन सकें । पत्नी दीपक जला लायी और बिना कुछ बहस किये रखकर चली गई ।

कबीर ने कहा— 'गृहस्थ बनना हो तो परस्पर ऐसे विश्वासी बनना, कि दूसरे की इच्छा ही अपनी इच्छा बने ।

दूसरा उदाहरण सन्त का देना था । वे जिज्ञासु को लेकर एक टीले पर गये, जहाँ वयोवृद्ध महात्मा रहते थे । वे कबीर को जानते न थे । नमाज के उपरान्त उनसे पूछा 'आपकी आयु कितनी है ।' बोले— 'अस्सी बरस ।'

इधर-उधर की बातों के बाद कबीर ने कहा— 'बाबा जी, आयु क्यों नहीं बताते ?' सन्त ने कहा था— 'बेटे, अभी तो बताया था, अस्सी बरस ! तुम भूल गये हो । टीले से आधी चढ़ाई उतर लेने पर कबीर ने सन्त को जोर से पुकारा और नीचे आने के लिए कहा । वे हाँफते-हाँफते चले गये । कारण पूछा, तो फिर वही प्रश्न किया— 'आपकी आयु कितनी है ?' सन्त को तनिक भी क्रोध नहीं आया । वे उसे पूछने वाले की विस्मृति मात्र समझे और कहा— 'अस्सी बरस है ।' हँसते हुए वापस लौट गये ।

कबीर ने कहा— 'सन्त बनना हो तो ऐसा बनना, जिसे क्रोध ही न आये ।'

## शैतान का वश नहीं चलता

महर्षि कबीर अपने शिष्यों से कहा करते कि 'रोज सबेरे शैतान आकर मुझसे प्रश्न करता है— 'आज तू क्या खायेगा ?' मैं जबाब देता हूँ— 'मिट्टी खाऊँगा ।' वह पूछता है— 'क्या पहनेगा ?' मैं जवाब देता हूँ— 'मुर्दे का कपड़ा ।' वह फिर पूछता है 'रहेगा कहाँ !' मैं जवाब देता हूँ— 'श्मशान में ।'

मेरे ये उत्तर सुनकर शैतान मुझे बड़ा अभागा बताकर चल देता है । क्योंकि मैं उन सभी चीजों से अनिच्छा प्रकट करता रहता हूँ कि जिनमें वह संसार के प्राणियों को फँसाकर मनुष्य से राक्षस बना देता है । इसी से उस का वश नहीं चलता ।

## पत्नी की सूझ-बूझ

एक पापी मनुष्य को एक बार अपने पापों के लिए पछतावा हुआ । उससे किसी ने कहा— 'तू कबीर दास के पास जा । वे तेरे मन को शान्ति प्रदान करेंगे ।' वह मनुष्य जैसे रोगी अस्पताल में जल्दी जाय, उसी तरह कबीर के यहाँ गया । कबीर घर पर नहीं थे । इसलिए उनकी पत्नी ने दृढ़तापूर्वक तीन बार भगवान् का नाम लेने को कहा । पापी ने सच्चे भाव से वैसा ही किया । इससे उसका मन शान्त हो गया और वह नाचता-कूदता हुआ ईश्वर-स्मरण में मस्त हो गया । इसी समय कबीर घर आ गये । ऐसे प्रेमी मनुष्य को देखकर वे बहुत प्रसन्न हुए । पत्नी ने उस भक्त का सब हाल बताया । कबीर ने खिन्न होकर अपनी पत्नी से कहा— 'केवल एक बार प्रभु का नाम ले लेने से सब कुछ सिद्ध हो जाता है । तब तुमने तीन बार हरिनाम लेने को क्यों कहा ? इससे मालूम होता है कि तुमको ईश्वर पर विश्वास नहीं है ।' स्त्री बोली— 'तीन बार नाम लेने का आशय यह था कि जिससे उस पापी का कायिक, वाचिक और मानसिक मैल दूर हो जाय ।' कबीर अपनी पत्नी की इस सूझ पर बहुत प्रसन्न हुए ।